



ASTRO ARPITA NATH

अस्त ग्रह और उनके प्रभाव

Arpita Nath द्वारा • कुंडली कैसे पढ़ें • 2026-07-27

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, जब कोई भी ग्रह सूर्य (Surya) के बहुत निकट आ जाता है, तो वह एक ऐसी स्थिति में आ जाता है जिसे अस्त (Combustion - संस्कृत: अस्त या अस्तंगत) कहा जाता है।

चूँकि सूर्य एक अत्यधिक गर्म, तीव्र और अंधा कर देने वाली ब्रह्मांडीय भट्टी के समान है जो अहंकार, आत्मा और सर्वोच्च सत्ता का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए इसके अत्यंत निकटतम कक्षीय क्षेत्र में आने वाला कोई भी ग्रह सूर्य के तीव्र तेज के कारण "अस्त" या ओझल हो जाता है।

कुंडली (Kundli) में ग्रह के अस्त होने का क्या अर्थ है?

जब कोई ग्रह अस्त होता है:

- दृश्यता खोना:** प्रतीकात्मक रूप से, ग्रह आकाश में अपनी स्वतंत्र शक्ति और दृश्यता खो देता है।
- अहंकार का प्रभाव:** ग्रह के स्वाभाविक गुण सूर्य (अहंकार, पिता, अधिकार या आत्म-गौरव) के प्रभाव में आ जाते हैं या उसके द्वारा दबा दिए जाते हैं।
- आंतरिक ऊर्जा:** वह ग्रह भौतिक जगत में अपने परिणाम आसानी से व्यक्त करने में संघर्ष करता है, जिससे उसकी ऊर्जा भीतर की ओर केंद्रित हो जाती है अथवा अपने स्वामित्व वाले भावों से संबंधित मामलों में देरी और निराशा उत्पन्न होती है।

अस्त होने के अंश (सूर्य से दूरी)

कोई ग्रह तब अस्त होता है जब वह सूर्य से एक निश्चित अंश (Degrees) के दायरे में आता है:

- चंद्रमा (Chandra):** सूर्य से 12° के भीतर (अमावस्या का निर्माण करता है)
- मंगल (Mangal):** सूर्य से 17° के भीतर
- बुध (Budh):** 14° के भीतर (वक्रि होने पर 12°)
- बृहस्पति (Guru):** सूर्य से 11° के भीतर
- शुक्र (Shukra):** 10° के भीतर (वक्रि होने पर 8°)
- शनि (Shani):** सूर्य से 15° के भीतर

*(नोट: राहु और केतु छाया बिंदु हैं और वे अस्त नहीं होते। इसके बजाय, वे सूर्य को ग्रहण लगाते हैं!)

प्रत्येक अस्त ग्रह के प्रभाव

1. अस्त चंद्रमा (Chandra Asta)

- मुख्य प्रभाव:** भावनात्मक असुरक्षा, मानसिक शांति की कमी और आंतरिक चिंता।
- प्रमुख परिणाम:** चूँकि चंद्रमा मन (Manas) का कारक है, इसके अस्त होने से व्यक्ति अपनी भावनाओं को निष्पक्ष रूप से संतुलित करने में संघर्ष करता है। जातक अत्यधिक संवेदनशीलता, कम शारीरिक ऊर्जा या माता के साथ जटिल संबंधों का अनुभव कर सकता है।

2. अस्त मंगल (Mangal Asta)

- मुख्य प्रभाव:** दबा हुआ क्रोध, अनियंत्रित शारीरिक ऊर्जा और आंतरिक बेचैनी।

- **प्रमुख परिणाम:** मंगल साहस, पराक्रम और शारीरिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। अस्त होने पर, इसकी तीव्र ऊर्जा सूर्य द्वारा सोख ली जाती है। इसके परिणामस्वरूप अचानक गुस्सा आना, निष्क्रिय-आक्रामक व्यवहार, रक्तचाप की समस्याएँ या भाइयों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मतभेद हो सकते हैं।

3. अस्त बुध (Budh Asta) - बुधादित्य योग (Budhaditya Yoga) का प्रभाव

- **मुख्य प्रभाव:** अत्यधिक सोचना (ओवरथिंकिंग), व्यक्तिपरक तर्क और संवाद में बाधाएँ।
- **प्रमुख परिणाम:** बुध अक्सर सूर्य के निकट रहता है, जिससे प्रसिद्ध बुधादित्य योग (बुद्धि का योग) बनता है। हालाँकि, यदि बुध बहुत अधिक निकट (अस्त) हो, तो बौद्धिक तीव्रता अहंकार से भरे विचारों, मानसिक अशांति या वाणी और लेखन में गलतफहमियों का रूप ले सकती है।

4. अस्त बृहस्पति (Guru Asta)

- **मुख्य प्रभाव:** रूढ़िवादिता से संघर्ष, आध्यात्मिक संदेह और भाग्य में देरी।
- **प्रमुख परिणाम:** बृहस्पति ज्ञान, गुरुओं और उच्च दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। जब गुरु अस्त होता है, तो व्यक्ति को बड़ों या शिक्षकों की सलाह स्वीकार करने में कठिनाई हो सकती है, धन और संतान सुख में देरी का सामना करना पड़ सकता है, या ऐसे कठोर व अहंकारी विचार हो सकते हैं जो व्यक्तिगत विकास में बाधा डालते हैं।

5. अस्त शुक्र (Shukra Asta)

- **मुख्य प्रभाव:** प्रेम संबंधों में अवास्तविक अपेक्षाएँ, रिश्तों में तनाव और दबी हुई इच्छाएँ।
- **प्रमुख परिणाम:** शुक्र प्रेम, संबंधों, विलासिता और कला का कारक है। अस्त शुक्र अक्सर प्रेम में बहुत ऊँचे मानक बना देता है जिससे निराशा होती है, समझौता करने में कठिनाई आती है या साथी पर अपना अहंकार थोपने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

6. अस्त शनि (Shani Asta)

- **मुख्य प्रभाव:** सत्ता व अधिकारियों से टकराव, गहरी निराशा और भारी दबाव।
- **प्रमुख परिणाम:** शनि और सूर्य परम शत्रु हैं। जब शनि अस्त होता है, तो कर्तव्य (शनि) और अहंकार (सूर्य) के बीच का तनाव चरम पर पहुँच जाता है। इसके कारण कार्यक्षेत्र में वरिष्ठों या पिता के साथ मतभेद, कड़ी मेहनत की पहचान न मिलने की भावना और कार्य-जीवन संतुलन बिगड़ने पर अत्यधिक थकान हो सकती है।

क्या अस्त ग्रह पूरी तरह से निष्प्रभावी हो जाता है?

बिल्कुल नहीं! अस्त ग्रह पूरी तरह नष्ट नहीं होता है। यद्यपि इसके भौतिक और बाहरी परिणामों में बाधाएँ या देरी आ सकती है, लेकिन इसका कारकत्व (Karakatva) अक्सर जातक को गहरा आत्म-विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे वह उस ग्रह से जुड़े सबकों को सीखने के लिए और अधिक परिश्रम करता है।

इसके अलावा, यदि अस्त ग्रह अपनी अनुकूल राशि (Rashi) में स्थित हो या बृहस्पति जैसे शुभ ग्रहों की दृष्टि उस पर हो, तो समय के साथ उसके आंतरिक सकारात्मक परिणाम बहुत सुंदरता से सामने आते हैं।

<https://astroarpitanath.com/hindi/combust-planets-effects/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।